Vol 6 Issue 6 Dec 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT Golden Research Thoughts

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

ममता कालिया के उपन्यासों मे चित्रित परिवर्तित सामाजिक जीवन

प्रा.सौ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे
हिंदी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा.

शोधालेख का सारांश :
आधुनिक शिक्षा–दीक्षा से सभी ओर परिवर्तन नजर आ रहा है। परंपरागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव, संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई देती है। ममता कालिया के उपन्यासों में आधुनिक काल के बदलते जीवन–मूल्य तथा परिवर्तित सामाजिक जीवन का चित्रण दिखाई देता है। उनके उपन्यासों के स्त्री–पुरुषों के प्रेम, विवाह एवं दांपत्य जीवन के प्रतिमान बदले हुए हैं। विवाह पूर्व और विवाहेत्तर संबंधों में बढ़ोतरी होकर निजी जीवन के खुलेपन और मुक्ति के एहसास में मनुष्य जीवन जीने लगा है। ममता कालिया के उपन्यासों में ऐसे कई स्त्री ओर पुरुष पात्र है जो विभिन्न परिस्थितियों में विवाह पूर्व यौन संबंध बनाते हैं। लिव इन रिलेशनशिप जैसी पश्चिमी समाज प्रवृत्ति भारतीय समाज में प्रवेश कर चुकी है। ममता कालिया के उपन्यासों में इसका विवेचन प्रस्तुत है। उनके उपन्यासों की नारी सदियों से चली आ रही दासता का मुखर विरोध करके अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत हो उठी है। वह पुरुषों की बराबरी का सम्मान तथा समानाधिकार चाहती है। कुछ नारियाँ बढ़ते सामाजिक तथा पारिवारिक अन्याय, अत्याचारों से विवाह से विमुख होकर स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में हैं। वर्तमान समय की परिवर्तित पुरुषी सोच का जिक्र भी ममता जी के उपन्यासों में मिलता है। आज के जमाने में सर्वेश जैसे परिवर्तित पुरुषी सोच रखने वाले पुरुषों की आवश्यकता को ही ममता जी ने दर्ज किया है। पवन और सर्वेश

जैसे पुरुषों का चित्रण अपने उपन्यासों में करके ममता जी ने बदलते जमाने के संकेत दिए हैं। सामाजिक वातावरण यदि स्त्री–पुरुष के आपसी बराबरी और सम्मान का रहा तो बहुत–सी समस्याओं को सुलझाा जा सकता है। सदियों से शोषित, पीड़ित, दमित और उत्पीड़ित स्त्री पुरुषी वर्चस्व की जंजीरों से मुक्त हो सकती है। ममता कालिया के बहुत से उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक जीवन का चित्रण मिलता है।

प्रस्तावना :
इक्कीसवीं सदी सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है। वर्तमान आधुनिक युग बड़ी ही तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है जिसमें परंपरागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव, संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई देती है। मनुष्य की भौतिक साधनों के प्रति आसक्ति एवं बढ़ते हुए पूँजीवाद ने एक नई अर्थ संस्कृति को जन्म दिया है। राजनीतिक स्तर पर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, बेईमानी, अराजकता, अधिकारों का दुरूपयोग, अकर्मण्यता आदि विकृतियों से समाज आक्रांत हुआ है और जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में इन विकृतियों का प्रभाव गहराई तक पड़ा है। प्रेम, विवाह एवं दांपत्य के प्रतिमान भी बदल रहे हैं। स्त्री–पुरुषों की आधुनिक सोच के कारण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। समाज के कुछ प्रतिशत पुरुष स्त्रियों को बराबरी सम्मान तथा समानाधिकार देने के पक्ष में हैं। नई और पुरानी पीढ़ी के विचारों में अंतर आ रहा है। समाज की नारियाँ अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत होकर स्वतंत्र निर्णय ले रही है। साहित्य और समाज का गहरा संबंध होता है। रचना का कोई भी रचनाकार यदि किसी सृजन करता है तो उसमें आसपास का परिवेश तथा उसका व्यक्तित्व झाँकता है। मनुष्य का संपर्क जिन परिस्थितियों से होता है, वह परिस्थितियाँ कथावस्तु के रूप में स्वीकृत कर वह उसे रोचक बनाता है और समाज को वापस लौटा देता है। वैसे ही साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी गहन अनुभूति का परिचय देने वाली प्रतिभासंपन्न एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार है ममता कालिया। ममता जी ने अपने उपन्यासों में वर्तमान आधुनिक युग के सामाजिक परिवर्तन को यर्थाथता से रूपायित किया है। ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित प्रेम विवाह एवं दांपत्य जीवन संबंधी सामाजिक परिवर्तन का जिक्र प्रस्तुत शोधालेख में विदित है।

ममता कालिया का उपन्यास साहित्य :
साठोत्तरी काल के हिंदी साहित्यकारों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली ममता कालिया एक बहुचर्चित रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी स्वतंत्र लेखन शैली तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति से हिंदी साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। ममता कालिया ने कुछ श्रेष्ठ उपन्यासों की सृष्टि करके हिंदी उपन्यास जगत् में अपनी पहचान बना ली है। उनके अब तक नौ उपन्यास प्रकाशित हुए हैं, –'बेघर', 'नरक दर नरक', 'प्रेम कहानी','लड़कियाँ', 'एक पत्नी के नोट्स', 'दौड़', 'दुक्खम सुक्खम', 'अँधेरे का ताला', 'सपनों की होम डिलिवरी'। ममता जी ने इन उपन्यासों में जीवन की वास्तविकताओं और सामाजिक परिवर्तनों को प्रश्रय दिया है। आज के युग के बदलते परिवेश, परिस्थितियों और मानसिकता को अपने उपन्यासों में चित्रित कर पाठकों के सम्मुख रखने का महत्वपूर्ण काम लेखिका ममता कालिया ने किया है। इन उपन्यासों में आधुनिक काल के बदलते जीवन–मूल्य, विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पारिवारिक स्थितियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत है।

प्रेम, विवाह एवं दांपत्य जीवन में परिवर्तन :
भारतीय समाज में परंपरागत विवाह पारिवारिक, सामाजिक,

सांस्कृतिक एवं धार्मिक आधार रहे हैं। विधि–विधान से संपन्न विवाह सामाजिक तथा पारिवारिक दृष्टि से पवित्र और अटूट बंधन माने जाते थे, जिसका संबंध जन्म–जन्मांतरों से था। किंतु वर्तमान समय में बदलती सामाजिक परिस्थितियों में जागृत आत्मसजग स्त्रियाँ पारंपारिक विवाह को बंधन समझने लगी हैं। जिस कारण अविवाहित स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी है। इस संदर्भ में अरविंद जैन लिखते हैं, ''जैसे–जैसे आत्मनिर्भरता बढ़ी है, वैसे–वैसे सुशिक्षित और आत्मनिर्भर महिलाओं में अविवाहिताओं की संख्या भी लगातार बढ़ती गई है। आर्थिक, पारिवारिक और अन्य कारणों के अलावा स्वेच्छा से अविवाहित रहने की प्रवृत्ति भी बड़ी है। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में स्त्रियाँ अधिक अविवाहित पाई जाती हैं, जिसका मूल कारण सामाजिक चेतना और पारिवारिक दबाव ही हैं।''1 अब प्रेम, विवाह एवं दांपत्य के प्रतिमान बदल रहे हैं। इसके पहले स्त्री के जीवन में यौन शुचिता और पवित्रता उसके जीवन का सबसे बड़ा मूल्य थी, अब उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं रह गई है। विवाह पूर्व और विवाहेत्तर संबंधों में बढ़ोतरी हो रही है। विवाह विकल्प के रूप में सहजीवन का सिद्धांत सीमित रूप में सही, मान्यता प्राप्त करता जा रहा है। स्त्री–पुरुषों में उन्मुक्त काम एवं भोग प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। समाज के समग्र ढाँचे में परिवर्तन हो रहा है। लेखिका ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–पुरुषों की सोच में परिवर्तन परिलक्षित है।

विवाह पूर्व यौन संबंध :

आधुनिकता के दौर में विवाह पूर्व यौन संबंधों ने जगह बना ली है। आधुनिक समाज में पुरुषों के साथ ही स्त्री की सोच में भी परिवर्तन आया है और वह भी विवाहपूर्व दैहिक संबंधों को सामान्य मानने लगी है। इस संदर्भ में राजेंद्र यादव लिखते हैं, ''वह सती–सावित्री या शुद्ध पवित्रता और सिर्फ बेटी, बहन, पत्नी बने रहने वाली इकाई नहीं है। उन्हीं कैदों में उसके होने की सार्थकता अब व्रत–कथाओं में ही सुनाई देती है, न वह सिर और आँखे झुकाए विनय की प्रति मूर्ति हैं।''2 ममता कालिया के उपन्यासों में भी ऐसे कई स्त्री और पुरुष पात्र है जो विभिन्न परिस्थितियों में विवाह पूर्व यौन संबंध बनाते हैं।

'नरक दर नरक' उपन्यास की उषा और जगन कुछ ही दिनों की पहचान पर एक–दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं और तब तक उनकी दोस्ती लड़खड़ाती चलती रहती है जब तक उषा उसके साथ कृष्णा लॉज नहीं चली जाती। उपन्यास के अनुसार ''शारीरिक स्तर पर परितोष दोनों के लिए ही एक विस्मय की तरह आया। जरूरत दर जरूरत वे एक–दूसरे के आगे खुलते गए। दोनों को लगा, वे फिलहाल और कुछ नहीं चाहते। समस्त विश्वविद्यालय एक ओर खिसकाकर वे इस देह लय को समर्पित हो गए।''3 उषा और जगन सात दिन बाद अलग होने के समय में एक–दूसरे का स्वभाव भी नहीं समझे थे लेकिन यह तय था वे दोनों बहुत जल्दी विवाह करना चाहते थे और विवाह कर भी लेते हैं।

'बेघर' उपन्यास की संजीवनी भरुचा और परमजीत के बीच भी विवाह से पहले ही यौन संबंध प्रस्थापित होते हैं। संजीवनी अपने प्रेमी परमजीत के साथ दैहिक संबंध बनाने में भय रखती है पर परमजीत का पौरुष और आग्रह उसे उत्तेजित तथा निढ़ाल बना देता है, ''संजीवनी ने बहुत मना किया, कई तरह के डर दिखाए, कितने ही बहाने बनाए, फिर वह नर्वस होकर काँप गई। परमजीत ने उसे पकड़ लिया था और बहुत हल्के हाथों से उसके कसाव ढ़ीले कर दिए। पर्त–दर–पर्त कपड़े उतरने पर वह चमत्कृत होता गया। कुछ देर संजीवनी ने संघर्ष किया पर परमजीत ने उसे मसलकर, सहलाकर, गुदगुदाकर इतना उत्तेजित कर दिया कि वह स्वयं निढ़ाल हो गई।''4 संजीवनी के समर्पण के बाद जब परमजीत को पता चलता है कि वह उसके जीवन में पहला पुरुष नहीं है तो वह उसकी तरफ से हमेशा के लिए मुँह मोड़ लेता है। परमजीत के पहले संजीवनी कॉलेज के सहपाठी विपिन द्वारा जबरदस्ती आकस्मिक आक्रमण का शिकार हो चुकी थी।

बिना विवाह के पुरुष के साथ :

भारतीय विवाह व्यवस्था को चुनौती देने वाली पश्चिमी समाज प्रवृत्ति भारतीय समाज में भी प्रवेश कर चुकी है। इसका जिक्र ममता जी के उपन्यासों में भी हुआ है। ''लिव इन यानी एक साथ रहने की सहमति, जिसमें कोई तीसरा नहीं होता। यह दो के बीच मौखिक संबंध होता है, जो धीरे–धीरे दैहिक संबंध में बदल जाता है।'' ममता कालिया के उपन्यासों में बिना विवाह किए नारी–पुरुष साथ–साथ रहते हैं। 'दौड़' उपन्यास की स्टैला विवाह से पहले ही पवन के साथ रहती है। स्टैला पवन की बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर और रूम पार्टनर तीनों है। पवन की माँ को यह बात अच्छी नहीं लगती तब वह माँ को ही समझाता है, ''तुमने देखा क्या है माँ ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी न। यहाँ गुजरात, सौराष्ट्र में शादी तय होने के बाद लड़की महीने भर ससुराल में रहती है। लड़का–लड़की एक–दूसरे के तौर–तरीके समझने के बाद ही शादी करते हैं।''5 शादी –ब्याह के मामले में सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। नई पीढ़ी पुराने संस्कारों को त्यागकर अपनी मर्जी से नवीनता को अपना रही है। स्वतंत्र विचार वृत्ति और उन्मुक्त जीवन जीने की ललक से सहजीवन का नया तरीका आ गया है। 'बेघर' उपन्यास में विजया केलकर और वालिया भी बिना विवाह के साथ रहते हैं। विजया वालिया के ऑफिस में टाइपिस्ट की हैसियत से काम करती है और उसके साथ सहजीवन बिताती है। 'नरक दर नरक' की उषा भी विवाह से पहले जोगेंदर साहनी के साथ सहजीवन में रहती है। सामाजिक जीवन–मूल्यों के परिवर्तन से विभिन्न समस्याएँ भी उपस्थित हो रही है। स्त्री के साथ शारीरिक मानसिक दुर्व्यवहार की संभावनाएँ बढ़ गई है।

अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत :

नारी सदियों से चली आ रही स्त्री–दासता का मुखर विरोध करके अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सजग एवं सचेत हो उठी है। आधुनिक शिक्षा तथा बदलते परिवेश से नारी का आत्मसम्मान जागृत हो चुका है। ममता कालिया के 'लड़कियाँ' उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र लल्ली किसी की दासी या भोग्या नहीं बनना चाहती इसलिए वह विवाह न करने का निर्णय लेती है। विवाह को वह एक बंधन मानती है। वह कहती है, ''औरत पहले एक पुरुष ढूँढ़ती है फिर एक भगवान, धीरे–धीरे उसकी सारी जिंदगी तलाश और समर्पण बन जाती है। मेरी माँ ने यह गलती की, मेरी मौसी ने की, मैं नहीं करूँगी।''6 लल्ली शादी करके अपनी आजादी समाप्त नहीं करना चाहती। अखबार में नारी के अत्याचार की खबरे पढ़कर, पड़ोस की नारी उत्पीड़न की कुछ घटनाएँ सुनकर लड़कियाँ विवाह न करने के निर्णय पर डटी रहने लगी है। 'दौड़' उपन्यास की स्टैला आत्मसजग और आत्मनिर्भर नारी है। वह परंपरागत चूल्हे–चौके में न उलझकर लाखों का कारोबार सँभालती है। पति पवन ने खुद खाना बनाना सीखना चाहिए ऐसे विचारों की वह है। स्टैला खुद भी रसोई के मामले में एकदम अनाड़ी है। 'दुक्खम सुक्खम' की विद्यावती वृद्धावस्था में आकर अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत हो जाती है। जीवन भर पति वर्चस्व सहकर वृद्धावस्था में वह उसकी बातों का तार्किक जवाब देने लगती है। 'सपनों की होम डिलिवरी' उपन्यास की रुचि दादा–दादी के पुण्य कमाने की हसरत से उनकी पसंद के लड़के से शादी करके बदचलन और बददिमाग पति के शिकंजे में अटक जाती है। कुछ सालों तक सब कुछ सहकर एक दिन पति का घर छोड़कर, उसके बेटे को भी पति के पास ही रखकर पितृ–गृह लौट आती है। अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत होकर आत्मनिर्भर बनकर सम्मानजनक जिंदगी जीती है। टी.वी चैनल पर व्यंजन विशेषज्ञ की हैसियत से काम करते हुए अपनी पसंद के पुरुषों से पुनः एक बार विवाह रचाकर सामंजस्य स्थापित करती है। आर्थिक रूप से नारी स्वतंत्र नहीं होती तब तक उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। क्षमा शर्मा लिखती हैं, ''स्त्रियों को यह समझ में आ गया है कि जब तक उनकी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती तब तक उसका विकास नहीं हो सकता क्योंकि दुनिया के अधिकांश

संसाधनों पर पुरुषों का कब्जा है। इसीलिए स्त्रियाँ वित्तीय बाजार में होने वाले परिवर्तनों में दिलचस्पी लेने लगी हैं। उन्हें अपने अनुकूल बनाने की कोशिश कर रही है।''7 ममता कालिया के उपन्यासों के नारी पात्र आर्थिक स्वतंत्रता को महत्व देकर अपने अस्तित्व, अस्मिता और नारी मुक्ति के लिए इसे आवश्यक मानते हैं।

परिवर्तित पुरुषी सोच –

युगों –युगों से मानव समाज में पुरुष की तुलना में स्त्री हमेशा हीन अवस्था में रही है पर आज इस स्थिति में कुछ बदलाव आ रहा है। वर्तमान समय में पुरुषों की सोच में कुछ अंशो में परिवर्तन आ गया है। ममता कालिया के उपन्यासों के कुछ प्रमुख पुरुष पात्र स्त्री को बराबरी का दर्जा और सम्मान देने के पक्ष में हैं। 'दौड़' उपन्यास का पवन अपनी पत्नी स्टैला के कंप्यूटर विजर्ड होने और लाखों का कारोबार सँभालने पर गर्व करता है। वह स्त्रियों का जीवन रसोई में भट्टी बनने देने के पक्ष में नहीं है। पवन की माँ जब स्टैला ने कम से कम दाल रोटी बनाना सीखना चाहिए ऐसा कहती है तब वह कहता है, ''खाना बनाने वाला पाँच सौ रुपए में मिल जाएगा माँ, इसे बावर्ची थोड़ी बनाना है।'' पवन के विचार आधुनिक है वह स्टैला के गुण देखता है। फिर माँ स्टैला में कुछ स्त्रियोचित गुणों को पैदा करने की बात करती है तब वह कहता है, ''अरे माँ, आज के जमाने में स्त्री और पुरुष का उचित अलग अलग नहीं रहा है। आप तो पढ़ी–लिखी हो माँ, समय की दस्तक पहचानो। इक्कीसवीं सदी में ये सड़े–गले विचार लेकर नहीं चलना है हमें, इनका तर्पण कर डालो।''8 पवन किसी भी प्रकार के बंधन या दबाव अपनी पत्नी पर नहीं डालता, वह उसे मुक्त रूप से जीने की पूरी आज़ादी देता है। परंपरागत पुरुषी वर्चस्व, स्त्रियों को हीन दर्जा देने की वृत्ति का स्पष्ट नकार पवन के पात्र से व्यक्त है।

ममता कालिया के 'सपनों की होम डिलिवरी' उपन्यास का सर्वेश नारंग अपनी पहली वर्चस्ववादी पत्नी से तलाक लेकर दूसरी स्त्री रुचि के साथ प्रेम विवाह कर लेता है। रुचि और सर्वेश आपस में समझौता करके सामंजस्यपूर्ण विचारों से एक –दूसरे को पूरी आजादी देकर विवाह बंधन में बँधे रहते हैं। वे दोनों एक वयस्क समझदारी से रहते हैं। सर्वेश रुचि को कहता है, ''रिची हम एक–दूसरे के पन्द्रह अगस्त बनेंगे। तुम मेरी छब्बीस जनवरी, मैं तुम्हारा पन्द्रह अगस्त। हम ऐसा रिश्ता बनाएँगे जिसमें खूब खुलापन हो। तुम अपना काम करती रहो, मैं अपना काम करता रहूँ।''9 आज के जमाने में सर्वेश जैसे परिवर्तित पुरुषी सोच रखने वाले पुरुषों की आवश्यकता को ही ममता जी ने दर्ज किया है। पवन और सर्वेश जैसे पुरुषों का चित्रण अपने उपन्यासों में करके ममता जी ने बदलते जमाने के संकेत दिए हैं। सामाजिक वातावरण यदि स्त्री–पुरुष के आपसी बराबरी और सम्मान का रहा तो बहुत–सी समस्याओं को सुलझाा जा सकता है। सदियों से शोषित, पीड़ित, दमित और उत्पीड़ित स्त्री पुरुषी वर्चस्व की जंजीरों से मुक्त हो सकती है। ममता कालिया के बहुत से उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक जीवन का चित्रण मिलता है।

निष्कर्ष :

आधुनिक शिक्षा–दीक्षा से सभी ओर परिवर्तन नजर आ रहा है। परंपरागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव, संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई देती है। ममता कालिया के उपन्यासों में आधुनिक काल के बदलते जीवन–मूल्य तथा परिवर्तित सामाजिक जीवन का चित्रण दिखाई देता है। उनके उपन्यासों के स्त्री–पुरुषों के प्रेम, विवाह एवं दांपत्य जीवन के प्रतिमान बदले हुए हैं। विवाह पूर्व और विवाहेत्तर संबंधों में बढ़ोतरी होकर निजी जीवन के खुलेपन और मुक्ति के एहसास में मनुष्य जीवन जीने लगा है। ममता कालिया के उपन्यासों में ऐसे कई स्त्री ओर पुरुष पात्र है जो विभिन्न परिस्थितियों में विवाह पूर्व यौन संबंध बनाते हैं। लिव इन रिलेशनशिप जैसी पश्चिमी समाज प्रवृत्ति भारतीय समाज में प्रवेश कर चुकी है। ममता कालिया के उपन्यासों में इसका विवेचन प्रस्तुत है। उनके उपन्यासों की नारी सदियों से चली आ रही दासता का मुखर विरोध करके अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत हो उठी है। वह पुरुषों की बराबरी का सम्मान तथा समानाधिकार चाहती है। कुछ नारियाँ बढ़ते सामाजिक तथा पारिवारिक अन्याय, अत्याचारों से विवाह से विमुख होकर स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में हैं। वर्तमान समय की परिवर्तित पुरुषी सोच का जिक्र भी ममता जी के उपन्यासों में मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

1. अरविंद जैन –औरत :अस्तित्व और अस्मिता, सारंग प्रकाशन, दिल्ली,2000, पृ.47
2. हंस – अक्तूबर, 2010, पृ.5
3. ममता कालिया – नरक दर नरक, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली,2008,पृ.36
4. ममता कालिया – बेघर, साक्षरा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, 2002, पृ.83
5. ममता कालिया – दौड़, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.52
6. ममता कालिया – तीन लघु उपन्यास, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली,2007 पृ.99
7. क्षमा शर्मा – स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ.73
8. ममता कालिया –दौड़, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.63
9. ममता कालिया – सपनों की होम डिलिवरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृ.58–59

प्रा.सौ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे
हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org